शिवरात्रि पर लीजिए वरदान शिव से

'शिवरात्रि' शब्द हर चौबीस घंटे में एक बार आने वाले अंधकारमय काल-भाग का नाम नहीं है बल्कि यह शब्द यहाँ एक अलंकार के रूप में प्रयोग किया गया है। जब किसी के साथ कोई खुलेआम अन्याय करता है अथवा अत्याचार या लूट-खसूट, धोखेबाज़ी, नकल या बनावट-मिलावट पर उतर आता है तो वह पीड़ित व्यक्ति कहता है – 'अरे भाई, तुमने तो दिन दहाड़े लूट मचा रखी है। अरे, दिन में अंधेर! तुमने तो दिन में रात मचा रखी है; ऐसा अंधेर तो रात्रि में भी नहीं होता जो तुमने दिन में कर रखा है!' इस प्रकार के प्रचलित प्रयोग से सिद्ध है कि 'रात्रि' शब्द अंधेर, अन्याय, अत्याचार, धोखाबाज़ी और मारधाड़ का पर्यायवाचक है।

तो सारे कल्प में जब ऐसा समय आ जाता है जबकि मनुष्य लुटेरे, आततायी, धर्मभ्रष्ट और निशाचर अर्थात् रात्रि के भूत जैसे काम करने वाले, धर्मभ्रष्ट एवं कर्मभ्रष्ट हो जाते हैं, जब संसार में हाहाकार मच जाता है, तब चूंकि सदा जागती ज्योति परमात्मा शिव इस धरा पर मानव मात्र का कल्याण करने के लिए अवतरित होते हैं; इसलिए इस 'रात्रि' को लोग बाद में 'शिवरात्रि' के नाम से याद करते हैं और हर वर्ष उस सर्वमहान् वृत्तांत की स्मृति में त्योहार मनाते हैं।

परमात्मा शिव का अवतरण तभी होता है जब सारे संसार में घोर धर्मसंकट हो। सभी नर-नारी 'निशाचर' अथवा पतित बन गये हों और घोर अज्ञानान्धकार चहुँ ओर छाया हो। महान आत्माओं का महान ही कर्त्तव्य होता है, परमात्मा का कर्त्तवय भी 'परम' अर्थात् सर्वमहान् है। अत: उनका शुभागमन तभी होता है जब सभी अशुभ हों, अमंगलमय स्थिति में हों एवं अत्यंत पीड़ित हों।

'कलियुग' और 'रात्रि' – ये दोनों समानार्थक हैं

ऐसा समय तो कलियुग का अन्तिम चरण ही होता है। 'कलियुग' और 'रात्रि' – ये दोनों समान अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने किसी धर्म-प्रिय मित्र से कहता है कि 'देखो भाई! कैसा जमाना आ गया है, आजकल तो खुलमखुल्ला दिन-दहाड़े ही रिश्वत ली जा रही है, अन्याय हो रहा है, डाके डाले जा रहे हैं और लाज लूटी जा रही है' तो वह कहता है – 'भाई, क्या आप भूल गए हैं कि यह कलियुग है? कलियुग में तो ये सब होता ही है; यह कोई सतयुग थोड़े ही है?' अत: रात्रि और कलियुग – इन दोनों के इस प्रकार के प्रचलित प्रयोग से स्पष्ट है कि कलियुग की अंतिम वेला में अवतरण के कारण ही 'शिवरात्रि' – ऐसा नाम रखा गया है। कलियुग रूपी रात्रि में ही शिव का इस पृथ्वी पर शिवलोक से आगमन अथवा अवतरण होता है। शिव के 'दुखहर्त्ता', 'सुखकर्त्ता' अथवा 'हर-हर' आदि उपनाम भी तभी सार्थक सिद्ध होते हैं क्योंकि कलियुग के अंत में जन-जन के दुख हरकर वह सुख करता है अर्थात् सतयुग की स्थापना करता है। शिव युग-प्रवर्त्तक हैं, वह युग-पुरुष, नहीं-नहीं कल्प-पुरुष हैं। रात्रि के भी

मध्यकाल में, 12 बजे शिव का उत्सव मनाना यही सिद्ध करता है कि अधर्म की पराकाष्ठा के काल में अर्थात् कलियुग के अंतिम चरण में शिव का अवतरण होता है।

शिव के अवतरण-दिवस की कोई तिथि क्यों नहीं?

विचार करने पर आप इस परिणाम पर पहुँचेंगे कि अन्य जो महान् आत्मायें हैं, उनके दिव्य जन्मदिवस प्राय: किसी तिथि से संलग्न हैं। उदाहरण के तौर पर श्रीराम के जन्मदिन को 'रामनवमी' कहा जाता है क्योंकि वह चैत्र मास की नवमी तिथि को मनाया जाता है। इसी प्रकार, श्रीकृष्ण के जन्मदिवस को 'श्रीकृष्ण जन्माष्टमी' नाम से लोग जानते हैं क्योंकि लोग श्रीकृष्ण का जन्म भादों मास की अष्टमी तिथि को मानते हैं। अब प्रश्न उठता है कि 'जबकि अन्य महान पुरुषों के जन्मदिन किसी तिथि से युक्त किये जाते हैं, परमपुरुष अथवा परमात्मा शिव का जन्मदिवस किसी तिथि से क्यों नहीं जोड़ा जाता? इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि श्री राम अथवा श्री कृष्ण का जन्म तो दैहिक जन्म है, वे शिशु-तन लेकर किसी माता-पिता के यहाँ पालन-पोषण लेते हैं। वे माता-पिता उनके इस जन्मदिन को जानते हैं। परंतु परमात्मा शिव तो स्वयंभू हैं, वे श्रीराम अथवा श्रीकृष्ण की भाँति किसी माता-पिता के यहाँ शिशु-तन में जन्म नहीं लेते बल्कि वे तो एक साधारण, वयोवृद्ध मनुष्य के तन में दिव्य प्रवेश करते हैं अर्थात् स्वयं ही साकार (स्वयंभू) होते हैं। जिस मनुष्य के तन में वे अवतरित होते हैं, उसको वे 'प्रजापिता ब्रह्मा' नाम देते हैं। वे उस तन में उस मनुष्य की आयु-पर्यन्त उसी तन में नहीं रहते बल्कि प्रतिदिन कुछ समय के लिए अपने शिवलोक से आते हैं और उसके मुख-रूप उपकरण का प्रयोग करके अगम-निगम का भेद खोलकर पुन: शिवलोक को चले जाते हैं। अत: उनका अवतरण किसी एक तिथि से संगत नहीं किया जाता। फिर भी फाल्गुन मास वर्ष का अंतिम मास होता है और इस कारण वह कल्प के अंतिम युग अर्थात् कलियुग का प्रतीक होता है और कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि कलियुग के भी अंतिम चरण की सूचक होती है और उसमें भी अर्द्ध रात्रि का समय अत्यंत तमोप्रधानता का द्योतक होता है। अत: शिव के अवतरण का दिन किसी तिथि के साथ युक्त न होकर 'शिवरात्रि' नाम से जाना जाता है परंतु कलियुग के अंत के समय को सूचित करने के लिए यह फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को, अंधकारमयी रात्रि में मनाया जाता है।

शिव से मिलन कैसे मनायें और वरदान कैसे पायें?

हम पीछे बता आये हैं कि शिव का कोई शारीरिक अथवा सांसारिक रूप नहीं है बल्कि दिव्य एवं आत्मिक रूप दिव्य ज्योति स्वरूप है। अत: मालूम रहे कि हम परमात्मा शिव से तभी मिल सकते हैं जब हमें किसी भी सांसारिक रूप की स्मृति न आये और जब हम स्वयं भी आत्मिक स्वरूप में स्थित हों क्योंकि नियम यह है कि अव्यक्त स्थिति में टिक कर ही अव्यक्त को देखा जा सकता है।

शिव का कोई कायिक रूप नहीं है बल्कि उनका रूप आत्मा के रूप जैसा बिन्दु के आकार वाल है। अत: हम भी जब बिन्दु स्थिति में होंगे तभी उस परमपिता से आनन्दमय मिलन

का आत्मिक, अभूतपूर्व एवं अत्यंत अनमोल सुख ले सकेंगे। परम आत्मा से मिलन मनाने के लिए देह की सुधि-बुधि भुलाकर आत्मा-भाव में टिकना होगा। अहा! तभी जीवन का सच्चा सुख मिलेगा, सर्व मनोरथों में से सच्चा मनोरथ पूरा होगा, सभी रसों से उत्तम रस प्राप्त होगा, सभी संबंधों का सामूहिक एवं सच्चा संबंध मिलेगा और लक्ष्य की सिद्धि होगी।

हम शिव के पास जायें कैसे?

प्रश्न उठता है कि परमात्मा शिव के पास हम जायें कैसे और उनसे वरदान कैसे लें? शिव परमात्मा तो अशरीरी हैं। अत: मालूम रहे कि उनके पास बिन पग अर्थात् पाँव बिना ही जाना होता है और बिन कर अर्थात् हाथों के बिना ही उस दाता से लेना होता है। आप कहेंगे कि पाँव के बिना भला हम उसके पास कैसे जायेंगे और हाथों के बिना उससे कैसे वरदान लेंगे?

देखो, शरीर के पास शरीर से जाना होता है और जिसका शरीर ही न हो उसके पास बिना शरीर के जाना होता है। अत: पहले तो आप देह-अभिमान छोड़ो अर्थात् यह भूलो कि आप देह हो, बल्कि यह याद करो कि आप 'आत्मा' हो। आत्मिक नाते से ही आपका शिव परमात्मा के साथ संबंध है, इसी नाते से ही आपका उनसे मिलना होगा। अत: आत्मा के स्वरूप में स्थित होवो। परमात्मा के पास जाने का साधन तो मन ही है। अत: मन रूपी पाँव से शिव बाबा के पास जाओ और बुद्धि रूपी हाथों द्वारा उससे वरदान लो। मन द्वारा तो आप बहुत तीव्र गति से जा सकते हैं।

आप पूछेंगे कि मन द्वारा कैसे जायें, कहाँ जायें? देखो, वैसे भी संसार में जिसके साथ स्नेह होता है, उसके बारे में मनुष्य कहता है कि 'मेरा मन तो उसके पास है। मेरा तन भले ही यहाँ है, परंतु मन तो वहाँ लगा रहता है।' तो जबकि शिव परमात्मा से हमारा स्नेह है, हमारा तन यहाँ रहते हुए भी मन वहाँ जा सकता है।

अब हमें यह तो मालूम है ही कि सूर्य और तारागण से भी पार जो परमधाम, ब्रह्मलोक अथवा शिवलोक है जहाँ पर कि प्रकाश ही प्रकाश है, उसमें ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव वास करते हैं, तो सहज ही स्नेहपूर्ण रीति से हमारा मन वहाँ जाना चाहिए। वहाँ से ही तो हम सब इस संसार में आये हैं और वहाँ ही हम सभी को जाना भी है; अत: अब वहाँ ही हमें पहले मन से जाना चाहिए। संसार की भी यह रीति है कि जहाँ मनुष्य को जाना होता है पहले तो वहाँ उसका मन जाता है, पीछे वह स्वयं वहाँ पहुँचता है। तो अब जब हम मन की लगन शिव बाबा से लगायेंगे और बुद्धि द्वारा उसमें मगन हो जायेंगे तो इस स्नेह रूपी तार के द्वारा हमें उस सर्वशक्तिमान द्वारा शक्ति रूपी लाइट-माइट मिलेगी और हमारी बुद्धि के सभी भण्डारे भरपूर हो जायेंगे।

उस लाइट और माइट द्वारा ही हमारे विकर्म दग्ध होंगे और विकर्म दग्ध होने से ही हम मुक्ति को प्राप्त होंगे। अत: शिव के साथ मन से लगन लगाकर मगन हो जाना ही उस पापकटेश्वर से पाप काटने की सहायता लेना तथा उस मुक्तेश्वर से मुक्ति का वरदान पाना है।